आविर्	भाव, भूत	प्रकट	आविर्भाव, आविर्भूत
पुनर्	वास, मिलना	फिर	पुनर्वास, पुनर्मिलन
बहिस् / बहिर्	कार, मुख	बाहर	बहिष्कार, बहिर्मुख
सत्	जन, कार	सच्चा	सज्जन, सत्कार
सम	कालीन, कोण	समान	समकालीन, समकोण

दो उपसर्गों से निर्मित शब्द

निर् + आ + करण = निराकरण
प्रति + उप + कार = प्रत्युपकार
सु + सम् + कृत = सुसंस्कृत
अन् + आ + हार = अनाहार
सम् + आ + चार = समाचार
अन् + आ + सक्ति = अनासक्ति
अ + सु + रक्षित = असुरक्षित
सम् + आ + लोचना = समालोचना
सु + सम् + गठित = सुसंगठित
अ + नि + यंत्रित = अनियंत्रित
अति + आ + चार = अत्याचार
अ + प्रति + यक्ष = अप्रत्यक्ष

प्रश्न - अभ्यास

क) नीचे दिए गए शब्दों से उपसर्ग व मूल शब्द छाँटिए :

	उपसर्ग	मूल शब्द
अभिनायक	अधि	नायक
अभिशाप	अभि	शाप
अपमान	अप	मान
आचरण	आ	चरण

दुर्घटना	दुर्	घटना
उपसंहार	उपसम्	हार
उद्घाटन	उत्	घाटन
दुस्साहस	दुस्	साहस
निश्चल	निस्	चल
प्रताप	प्र	ताप
पुनरागमन	पुनर्/पुनः	आगमन
विकल	वि	कल
अंतरात्मा	अंतर्	आत्मा
परीक्षा	परि	ईक्षा

ख) अल, प्रति, सम, नीम उपसर्गों से दो-दो शब्द बनाइए।

उपसर्ग	मूलशब्द	निर्मित शब्द
अल	मस्त, गरज	अलमस्त, अलगरज
प्रति	शत, दिन	प्रतिशत, प्रतिदिन
सम	पर्क, चार	संपर्क, संचार
नीम	हकीम, होश	नीमहकीम, नीमहोश

प्रत्यय :

प्रत्यय - जो शब्दांश स्वयं कुछ अर्थ नहीं रखते, परंतु शब्दों के अंत में जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं।
उदाहरण :

पालन + हार = पालनहार
बल + शाली = बलशाली
जादू + गर = जादूगर
लड़ + आकू = लड़ाकू आदि ।

उपर्युक्त परिभाषा से स्पष्ट है कि -

क) प्रत्यय भी शब्दांश होते हैं।
जैसे : इक, इमा, आई, ता, आवट आदि
ख) प्रत्यय शब्दों के अंत में लगते हैं।
जैसे : मोर + नी = मोरनी
कला + कार = कलाकार
जादू + गर = जादूगर आदि ।
ग) मूल शब्द में जब प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाए जाते हैं, तो कभी कुछ शब्दों में कुछ ध्वनिपरिवर्तन हो जाया करता है और कुछ शब्द अपने मूल रूप में ही बने रहते हैं, जैसे :

खाट + इया = खटिया } ध्वनिपरिवर्तन
बूढ़ा + आपा = बुढ़ापा }

लघु + ता = लघुता } कोई परिवर्तन नहीं
मित्र + ता = मित्रता }

हिंदी में स्रोत के आधार पर दो तरह के प्रत्यय मिलते हैं :

क) कृत् प्रत्यय :
ख) तद्धित प्रत्यय
ग)
क) कृत् प्रत्यय : क्रिया धातु के पीछे लगकर विभिन्न शब्दों की रचना करने वाले प्रत्ययों को कृत् प्रत्यय कहते हैं।

कृत् प्रत्यय से बनने वाले शब्दों को कृदंत (कृत् + अंत) कहते हैं।

जैसे : लिख + आवट = लिखावट
तैर + आक = तैराक

कृत् प्रत्यय के भेद :

कृत् प्रत्यय के मुख्य पाँच भेद हैं :

क) कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय
ख) कर्मवाचक कृत् प्रत्यय
ग) करणवाचक कृत् प्रत्यय
घ) भाववाचक कृत् प्रत्यय
ङ) क्रियावाचक कृत् प्रत्यय

क) कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय

प्रत्यय	मूलधातु (क्रिया)	निर्मित शब्द
आक	गा	गायक
आक	तैर	तैराक
आका	उड़, लड़	उड़का, लड़ाका
अक्कड़	भूल	भुलक्कड़
आऊ	खा	खाऊ
आलू	झगड़	झगड़ालू